ऋग्वेद

यजुर्वेद

वर्ष-१२ अंक-४
२७ नवंबर २०१५

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल 32/2015-17
एक प्रति- २०-०० रु.

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

सामवेद

अथर्ववेद

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-१२ अंक-४

२७ नवंबर २०१५

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६

विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९०

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र. विषय	पृष्ठ
संपादकीय	5
महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय	6
वेदविरूद्धमत खण्डन	7
महर्षि दयानंद और आर्य समाज...	9
संकल्प शक्ति	11
भिखारी और नेता	12
जिन्दगी और मिठास	14
धर्म के 6 आधार	15
आखिर क्यों?	18
मृत्यु और समय	20
उज्जैन सिंहस्थ	24

दिसंबर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

3	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती, भोपाल गैस त्रासदी दिवस, किसान दिवस
6	डॉ. भीमराव अम्बेडकर पुण्य तिथि
7	झंडा दिवस
10	मानव अधिकार दिवस
14	ऊर्जा बचत दिवस
21	गीता जयंती
24	राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस
25	पं. मदन मोहन मालवीय जयंती
23	स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस
28	मद्य, छत्रसाल परमधाम दिवस

सम्पादकीय :

जाति व सम्प्रदाय के दावानल में झुलसता देश

– प्रकाश आर्य, महू

महर्षि दयानन्द सहित अनेक महापुरूषों ने जातिवाद व सम्प्रदाय को सामाजिक उन्नति में बाधक बताया है। इसके ही पक्ष में समाज व राष्ट्र के सच्चे हितैषियों ने समानता का व्यवहार करने की पहल की तथा जाति तथा साम्प्रदायिकता का विरोध किया। किन्तु समाज ने इसकी गंभीरता को नहीं समझा। आज अनेक राजनेता जातिवाद को कोसते हुए भी जातिवाद को फैलाने का पूरा पूरा प्रयास कर रहे हैं।

जातिवाद सनातन व्यवस्था नहीं है। जिस प्रकार अनेक वे विचारधाराएं आज प्रचलन में आ गई हैं, जिनका कोई ठोस आधार ही नहीं है। किन्तु उन्हें मानने वालों की संख्या जब अच्छी खासी हो गई तो उसे अब सामाजिक व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। वैसे ही वर्ण व्यवस्था के स्थान पर जाति व्यवस्था का प्रचलन हो गया।

वर्ण व्यवस्था जन्मना नहीं थी, गुण कर्म स्वभाव के आधार पर थी, जो सर्वथा उचित थी। मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार वर्णों में स्थान प्राप्त होता था।

जाति व सम्प्रदाय सामाजिक विघटन, विवाद और सामाजिक तथा राष्ट्रीय व्यवस्था में बाधक होता है। परिणाम सामने आ रहे हैं जातिवाद के प्रभाव में गुणवत्ता या समाज अथवा देश के लाभ हानि गौण हो जाते हैं। देश की राजनीति ने इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखा जा सकता है किसी पढ़े लिखे, योग्य समर्पित, राष्ट्र चिन्तक व्यक्ति के सामने अपनी किसी जाति की बाहुल्यता के आधार पर क्षेत्र से कोई अनपढ़, भ्रष्ट, कुख्यात व्यक्ति भी जीतकर आ जाता है।

किसी अच्छी राजकीय व्यवस्था को जाति बल के आधार पर नकार दिया जाता है। सीधा सीधा यह देखा जा रहा है कि आज जातिवाद की बेल को सींचकर उसका आकार बड़ा कर लो फिर तुष्टिकरण की नीति पर समाज का, राष्ट्र का जितना चाहो दोहन कर लो।

आज न समाजवाद है, न राष्ट्रवाद है न मानवीय दृष्टिकोण इन सब पर भारी जातिवाद है। परिणाम हुआ खरबूजे को देख खरबूजा रंग बदलता है की कहावत चरितार्थ हो रही है। जब जातिवाद के शास्त्र से ही सबकुछ पाया जा सकता है तो दूसरा वह जो अभी तक जातिवाद को महत्व नहीं देता रहा वह भी इसी ओर प्रेरित होकर जातिवाद के प्रभाव में आता जा रहा है।

यहां किसी पार्टी या पक्ष की दृष्टि से विचार न करें औरु इस पर विचार करें कि हाल ही में बिहार में सम्पन्न चुनाव ने यह स्पष्ट कर दिया। सारी सैद्धांतिक मान्यताएं अपने अपने पुराने संकल्प, एक दूसरे की बुराईयों को भूलकर केवल भाजपा साम्प्रदायिक है, कहकर अनेक गुट एक हो गए। किन्तु क्या वास्तव में ये दल साम्प्रदायिक विचारधारा, या जातियता के कारण सभी एक हुए? यदि ऐसा ही था तो फिर चुनावों के परिणाम को देखें जो जातिय समीकरण के आधार पर ही विजय दर्शाते हैं।

जातिवाद व सम्प्रदाय का बढ़ता प्रभाव राष्ट्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है। क्योंकि वर्तमान स्थिति को देखते हुए तो भविष्य में देश के निर्णायक बिन्दुओं का इनके ही द्वारा निराकरण किया जावेगा। जो जाति व सम्प्रदाय के हितों को सामने रखते हुए किए जायेगा, अन्य समाज की उपेक्षा होगी और राष्ट्र को उसमें महत्व नहीं दिया जावेगा।

जातिवाद की कट्टरता से मानव मानव की दूरियां बढ़ी हैं, साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण ही देश का विभाजन हुआ, प्रान्तों में अलगाववाद के बीज बोए जा रहे हैं, आन्तरिक दूरियां, कलह, स्वार्थ टकरा रहे हैं, अप्रत्यक्ष रूप से जातियों में, सम्प्रदायों में आपसी गृह युद्ध छिड़ चुका है। आन्तरिक कमजोरी का लाभ बाहरी ताकतें उठाती हैं वही सब कुछ होते जा रहा है। "घर को आग लग गई, घर के चिराग से...."

महर्षि ने इस क्षति को वर्षों पहले समझकर जातिवाद का विरोध किया था तथा मानव मात्र को समानता का दर्जा देने की पहल की। उसी आधार पर आर्य समाज ने इस बुराई का अन्त करने का आन्दोलन प्रारंभ किया था, प्रारंभ में कुछ बड़ी सफलताएं भी मिली। किन्तु आज वह लक्ष्य धूमिल होते जा रहा है। पुनः जातिवाद को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। आर्यों को पुनः इस भयानक खतरे से देश व समाज को बचाने हेतु घोर परिश्रम करने की आवश्यकता है।

ईश्वर –

ईश्वर निर्विकार और अनादि है तथा विकार रहित है सूक्ष्म से सूक्ष्म है। राग और वैराग्य से रहित है। प्राणीमात्र की आत्मा में संसार चक्र चलाने के लिए राग व वैराग्य उत्पन्न करने वाला है इसलिए उसे ईश्वर कहते हैं।

महर्षि द्वारा रचित ग्रंथों का परिचय

वेदान्तिध्वान्त निवारण

प्रश्न 1 : अद्वैतवाद अथवा नवीन वेदान्त के खण्डन के लिए क्या महर्षि ने कोई अन्य ग्रन्थ भी रचा था ?

उत्तर : हॉ, महर्षि ने वेदान्तिध्वान्त निवारण नामक ग्रंथ भी नवीन वेदान्तियों अथवा अद्वैतवाद के खण्डन में लिखा था।

प्रश्न 2 : इसकी रचना अद्वैतमत खण्डन के बाद हुई या पहले ?

उत्तर : वेदान्तिध्वान्त निवारण की रचना महर्षि ने अद्वैतमत खण्डन के लगभग साढ़े चार वर्ष बाद की थी।

प्रश्न 3 : वेदान्तिध्वान्त निवारण कौन से वर्ष में लिखा गया था ?

उत्तर : यह ग्रन्थ मार्गशीर्ष, संवत् 1931 में (सन् 1874) लिखा गया होगा, क्योंकि इसकी रचना महर्षि ने अपने प्रथम बम्बई निवास काल में की थी। उनका यह निवास काल कार्तिक कृष्ण 1, सं. 1931 से मार्गशीर्ष कृष्णा 12 तक (20 अक्टूबर से 5 दिसम्बर 1874) रहा। वैसे इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में इसका मुद्रण काल सं. 1932 वि. (सन् 1876) छपा हुआ है। इस के अनुसार, नवसंवत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 1933 (26 मार्च, सन् 1876) से पूर्व यह ग्रंथ छप चुका था।

प्रश्न 4 : इसका प्रथम संस्करण कहां से छपा था ?

उत्तर : इसका प्रथम संस्करण ओरियण्टल प्रेस बम्बई से छपा था।

प्रश्न 5 : क्या इसके और संस्करण भी छपे थे ? यदि हॉ, तो कब ?

उत्तर : हॉ, इसका दूसरा व तीसरा संस्करण भी छपा था, जिसमें प्रथम संस्करण की हिन्दी भाषा की अशुद्धियों को दूर करने का प्रयत्न किया गया था। द्वितीय संस्करण श्रावण संवत् 1939 में प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 6 : यह ग्रन्थ किस भाषा में था ?

उत्तर : यह ग्रंथ संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में था।

प्रश्न 7 : इस पुस्तक के लेखन में क्या विशेषता थी ?

उत्तर : पं. देवेन्द्रनाथ जी द्वारा रचित महर्षि के जीवनचरित से इस पुस्तक के लेखन के विषय में दो विशेष बातें प्रकट होती हैं।

1) आश्चर्य की बात है कि अद्वैतवाद के खण्डन विषयक यह पुस्तक महर्षि ने घोर अद्वैतवादी कृष्णाराम इच्छाराम जी से लिखवाई।

2) महर्षि ने इस पुस्तक का लेखन दो ही दिनों में समाप्त भी कर दिया था।

वेदविरूद्धमत खण्डन

प्रश्न 1 : वेदविरूद्धमत खण्डन नामक ग्रंथ में किस मत का खण्डन किया गया है ?

उत्तर : इस ग्रंथ में वल्लभ मत का खण्डन किया गया है। इस पुस्तक का दूसरा नाम वल्लभाचार्य मत खण्डन भी है।

प्रश्न 2 : वल्लभ मत कौन सा था ?

उत्तर : इस मत में वल्लभ नामक पुरूष को गुरू मानकर उनके ग्रंथों के आधार पर आचरण किया जाता था।

प्रश्न 3 : स्वामी जी ने इसका खण्डन क्यों किया ?

उत्तर : यह मत पूर्णतः वेदविरूद्ध सिद्धान्तों का प्रतिपादक था। वल्लभ जो मृत हो चुके हैं, उनका आचार्य होना सम्भव ही नहीं, क्योंकि जो शिष्य की कल्पसूत्र, वेदान्त सहित वेद पढ़ावे वही आचार्य हो सकता है और मरणोपरान्त पढ़ना संभव नहीं। दूसरा, इस मत में श्रीकृष्ण को भगवान माना गया है, जो कि असत्य है। इसी प्रकार की पाखण्ड युक्त बातें इस मत में फैलाई गई थीं।

प्रश्न 4 : स्वामीजी ने इसका खण्डन किस रूप में किया ?

उत्तर : इस मत के सभी सिद्धान्तों व ग्रंथों को लेकर, उनमें से प्रश्न उठाकर उनका खण्डन किया।

प्रश्न 5 : इस मत के ग्रंथ कौन–कौन से हैं ?

उत्तर : सिद्धान्त रहस्य शुद्धाद्वैतमार्तण्ड, सत्सिद्धान्तमार्तण्ड, विद्वन्मण्डन, अणु भाष्य, रस भावना आदि ग्रंथ इस मत के माने जाते हैं।

प्रश्न 6 : यह खण्डनात्मक ग्रंथ किस भाषा में है ?

उत्तर : यह खण्डनात्मक ग्रंथ गुजराती, हिन्दी और संस्कृत तीनों भाषाओं में है। संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद महर्षि के शिष्य भीमसेन शर्मा जी ने और गुजराती में अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया।

प्रश्न 7 : यहां तो केवल वल्लभमत का खण्डन है, फिर वेदविरूद्ध मत खण्डन यह नाम क्यों रखा गया ?

उत्तर : पहले तो स्वामी जी ने वल्लभमत के सभी सिद्धान्तों का वेद एवं युक्तियों के आधार पर विस्तार से खण्डन किया है। अन्त में उन्होंने लिखा है कि जैसे वेद और युक्ति से विरूद्ध वल्लभ का सम्प्रदाय है, वैसे ही शैव, शाक्त, गाणपत्य, सौर और युक्ति से विरूद्ध ही हैं। इस कथन से वेद के विरूद्ध सभी मतों व सम्प्रदायों का स्वतः खण्डन हो जाता है।

प्रश्न 8 : इसकी रचना महर्षि ने कब की ?

उत्तर : इसकी-रचना संवत् 1931, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या, मंगलवार के दिन पूर्ण हो गई थी।

प्रश्न 9 : इस पुस्तक का क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर : महर्षि के जीवन चरित को पढ़ने से पता चलता है कि इस पुस्तक के जबरदस्त प्रभाव के कारण वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायियों ने अनेक बार महर्षि के प्राण हरण का प्रयत्न किया।

प्रकृति

प्रश्न 8 : आध्यात्मिक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर : स्वयं की त्रुटि (मूर्खता) से प्राप्त होने वाले दुःख को आध्यात्मिक दुःख कहते हैं।

प्रश्न 9 : आधिदैविक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर : बाढ़, भूकम्प, अकाल आदि प्राकृतिक विपदाओं से प्राप्त होने वाले दुःख को आधि दैविक दुःख कहते हैं।

प्रश्न 10 : आधिभौतिक दुःख किसे कहते हैं ?

उत्तर : अन्य पशु–पक्षी मनुष्य आदि जीवों से प्राप्त होने वाले दुःख को आधिभौतिक दुःख कहते हैं।

प्रश्न 11 : क्या प्रकृति से अपने आप संसार बन सकता है ?

उत्तर : नहीं, ईश्वर की शक्ति व सहायता बिना प्रकृति से अपने आप संसार नहीं बन सकता है।

प्रश्न 12 : क्या प्रकृति कभी चेतन हो सकती है ?

उत्तर : नहीं, प्रकृति कभी भी चेतन नहीं हो सकती है ?

प्रश्न 13 : क्या प्रकृति की ब्रह्म से स्वतन्त्र सत्ता है या ब्रह्म ही जगत रूप में परिवर्तित हो जाता है ?

उत्तर : प्रकृति की सत्ता ब्रह्म से पृथक और स्वतन्त्र है। ब्रह्म जगत रूप में कभी परिवर्तित नहीं होता हैं।

प्रश्न 14 सत्व, रज, तम वास्तव में गुण हैं, या द्रव्य है ?

उत्तर : सत्व, रज, तम वास्तव में द्रव्य हैं, किन्तु सत्व गुण, रजो गुण, तमो गुण नाम से जाने जाते हैं।

प्रश्न 15 : क्या प्रकृति के समस्त परमाणु एक ही स्वरूप वाले हैं ?

उत्तर : नहीं, प्रकृति के परमाणु अलग–अलग स्वरूप, अलग–अलग गुण, कर्म, स्वभाव, रंग, रूप, आकार, भार वाले हैं।

– **आचार्य ज्ञानेश्वरार्यः**, रोजड़

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के संबंध में प्रमुख व्यक्तियों, विचारकों की सम्मतियां

यूं तो कितने ही महापुरूष हुए दुनियां में।
कोई गुरू देव दयानन्द सा देखा न सुना।।

यह पंक्तियां कोरी कल्पना नहीं है महर्षि के जीवन का यथार्त है। महर्षि के पराक्रम, विद्वता, साहस और कार्यों को देखकर किसी के मुख से ये उद्‌गार निकलना सहज होगा।

यह तो दुर्भाग्य है कि महर्षि की घोर तपस्या और बलिदान को उसकी योजना को समाज उतना नहीं समझ ही नहीं पाया।

जिस प्रयोजन के लिए यह सब हुआ था। सत्य सिर पर चढ़कर बोलता है, इसलिए महर्षि को उन व्यक्तियों ने जो सैद्धान्तिक रूप से भिन्नता रखते थे उन्होंने भी उन्हें उनके कार्यों को चरित्र को सराहा। कम से कम उस ऋषि के अपने को अनुयायी कहलाने वालों को इस पर पुनः चिन्तन करके महर्षि के त्याग तपस्या बलिदान का मूल्यांकन करना चाहिए। महर्षि के सपनों को भूलने के स्थान पर उन्हें पूर्ण करने हेतु प्रयत्न करना चाहिए। यही उस ऋषि के प्रति हमारी श्रद्धांजलि है। महर्षि के संबंध में अनेक विद्वानों, नेताओं, विचारकों ने अपनी लेखनी से उनकी महानता का वर्णन किया है, उनमें से कुछ व्यक्तियों की भावना इस प्रकार प्रस्तुत की जा रही है।

श्रीमती सरोजनी नायडू : भूतपूर्व अध्यक्ष इण्डियन नेशनल कांग्रेस

किसी की दृष्टि में ऋषि दयानन्द एक सच्चा मनुष्य दिखाई देता है, कोई ऋषि दयानन्द को सम्पूर्ण गुणों का समूह कहता है, किसी की दृष्टि में दयानन्द स्वाराज्य के जन्मदाता हैं, किसी की दृष्टि में ऋषि दयानन्द सच्चाई और निर्भयता का देवता और धर्म का अवतार है, कोई ऋषि दयानन्द को सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सुधारक कहता है। वस्तुतः लोग जो कुछ कहते हैं, दयानन्द वह सब कुछ हैं, परन्तु मैं तो ऋषि दयानन्द को प्रत्येक प्रकार की दासता और बन्धन से छुड़ानेवाला मानती हूं चाहे वह दासता मस्तिष्क की हो चाहे धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय हो।

मौलाना हसरत मोहानी :

जब कोई हिन्दू आर्य समाज में आ जाता है तो उसमें एक विशेष परिवर्तन उत्पन्न हो जाता है। उसमें उत्साह, देशभक्ति, निर्भयता और एक नयी प्रकार की भावना कार्य करने लगती है। जब लोग स्वराज्य के स्वप्न ले रहे थे तब श्री

दयानन्द और आर्य समाज अपने लेखन और प्रवचन के द्वारा इसका प्रचार कर रह थे। मैं प्रसन्नतापूर्वक यह बात कहना चाहता हूं कि असहयोग आन्दोलन के समय पहले लगभग 90 प्रतिशत आर्य समाजी स्वराज्य के कार्यों में भाग लेने वाले और नेता थे।

सर सैयद अहमद खॉ :

अत्यन्त खेद की बात है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी, जो संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित और वेद के बहुत बड़े गवेषक थे, 30 अक्टूबर 1883 को सायं 6 बजे अजमेर में परलोक सिधार गए। विद्या और पाण्डित्य के अतिरिक्त वे अत्यन्त दयालु और सरल स्वभाव मनुष्य थे। उनके श्रद्धालु उन्हें देवता समझते और निःसन्देह वे इस योग्य थे। वे ज्योतिःस्वरूप, निराकार परमात्मा के अतिरिक्त दूसरे किसी की पूजा उचित नहीं समझते थे। हमारी स्वामीजी के साथ बहुत घनिष्ठता थी। हम सदा उनका बहुत आदर करते थे, क्योंकि वे ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ पुरूष थे कि प्रत्येक मतवाले को उनका आदर अनिवार्य था। कदाचित हमारी समझ की गलती हो, परन्तु हमें ध्यान है कि वे प्रकृति को अनादि मानते थे। यदि उनका यह विचार न होता तो परमात्मा के संबंध में उनका और मुसलमानों का विश्वास बिल्कुल एक था। प्रत्येक प्रकार से वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका उदाहरण इस समय भारत में विद्यमान नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को उनकी मृत्यु पर दुःखी होना अनिवार्य है कि एक ऐसा अद्वितीय मनुष्य उनके मध्य से जाता रहा।

कर्नल अल्काट महोदय : थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक

स्वामी दयानन्दजी महाराज निःसन्देह एक महापुरूष और संस्कृत के एक बड़े विद्वान थे। उनमें उच्चकोटि की योग्यता, दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास था। वे मानव जाति के पथ प्रदर्शक थे। मेरी सम्मति में वे अत्यन्त सुडौल, लम्बे तगड़े, अत्यन्त मिलनसार और हमारे साथ व्यवहार करने में सदैव कृपालु थे। हमारे मन और मस्तिष्क पर उन्होंने अत्यन्त गहरा प्रभाव छोड़ा है।

मिस्टर ह्यूम : नेशनल कांग्रेस के जन्मदाता

सबको स्वीकार करना पड़ता है कि स्वामी दयानन्द एक महान और भद्र पुरूष थे और देश के लिए गर्व का कारण थे, जिसे वे हृदय से प्रेम करते थे। सब अनुभव करेंगे कि उनकी मृत्यु से भारत को एक बहुत बड़ी और खेद जनक हानि सहनी पड़ी है।

सर सुरेन्द्रनाथ बेनर्जी : बंगाल के बेताज बादशाह

पण्डित दयानन्द असाधारण कीर्तिवाले धार्मिक आचार्य थे। हो सकता है कि धार्मिक विचारों में हमारा उनसे विरोध हो अथवा हम उनके वेदों के भाष्य को स्वीकार न करें, तो भी एक आचार्य के रूप में उनकी शक्ति और तन्मयता सब पर

विजय पाती हुई प्रकट होती है। वह एक योगी और ऋषि या जिसने संसार को त्याग दिया, परन्तु वह ऐसी प्रतिभा से सम्पन्न था जो किसी संसारी मनुष्य में नहीं पायी जा सकती। उसकी मृत्यु से न केवल उस धार्मिक संस्था (आर्य समाज) को जिसका वह प्राण था एक अपूरणीय क्षति हुई है, प्रत्युत देश के उन सभी वासियों के लिए क्षति है जो सदा उनके ज्ञान पर गर्व करेगें और उसके नाम को सदा प्रेम और कृतज्ञता के साथ स्मरण करेगें।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

जो लोग मतभेद को सहन नहीं कर सकते वे चाहे इस बात को न मानें परन्तु जिनमें अपने शत्रु के भी गुणों की प्रशंसा करने का प्रशंसनीय साहस है वे स्वीकार करेगें कि स्वामी दयानन्द योग्यता का भण्डार और गवेषक प्रवृति का व्यक्ति था और वे कहेगें कि एक महापुरूष चल बसा। हिन्दू धर्म से गाढ़ प्रेम करने वालों को उचित था कि वे उसके साथ क्रूरता का व्यवहार न करते। यदि युग अनुकूल होता तो आर्य धर्म के सिद्धान्तों ने वेदान्तियों के सिद्धान्तों पर विजय प्राप्त कर ली होती। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वामीजी अधिक कार्य न कर सके और न ही उनके पाण्डित्य का पूरा मान–सम्मान हुआ, परन्तु इसका कारण हमारी ही उदासीनता थी। हमारे शासक जो हमसे सर्वथा भिन्न सम्प्रदाय के हैं, जिसका परिणाम यह हुआ है कि हममें किसी प्रकार का कोई जातीय धर्म नहीं रहा।

क्रमशः...............

संकल्प शक्ति

भगवान बुद्ध अपने शिष्य के साथ जंगल में जा रहे थे। रास्ते में पत्थर की एक बड़ी चट्टान देखकर शिष्य ने बुद्ध से पूछा – भगवन्! क्या इस चट्टान पर किसी का शासन संभव है ? भगवान बुद्ध ने शिष्य की जिज्ञासा को शान्त करते हुए कहा कि पत्थर से कई गुना शक्ति लोहे में होती है। इसलिए लोहा पत्थर को तोड़कर टुकड़े–टुकड़े कर देता है। तो फिर लोहे से भी कोई वस्तु श्रेष्ठ होगी, शिष्य ने प्रश्न किया। क्यों नहीं ? अग्नि है। जो लोहे के अहं को गलाकर द्रव्य रूप में बदल देती है। शिष्य ने पूछा अग्नि की विकराल लपटों के सम्मुख किसी की क्या चल सकती होगी ? केवल जल है जो उसी उष्णता को शीतल कर देता है। बुद्ध ने कहा। पुनः शिष्य ने पूछा जल से टकराने की ताकत किसमें होगी ? भगवान बुद्ध शिष्य से बोले – ऐसे क्यों सोचते हो वत्स ! इस संसार में एक से एक शक्तिशाली हैं। वायु का प्रवाह जलधारा की दिशा बदल देता है। संसार का प्रत्येक प्राणी वायु के महत्व को जानता है। शिष्य बोला – जब वायु ही जीवन है, फिर इससे अधिक महत्वपूर्ण वस्तु क्या होगी ? भगवान ने हंसते हुए शिष्य को जवाब दिया, मनुष्य की संकल्प शक्ति। जिसके द्वारा वायु भी वश में हो जाती है। मानव की यह शक्ति ही सबसे बड़ी है।

भिखारी और नेता

एक भिखारी और नेता में,
हो गया विवाद।
बढ़ गई बात पर से बात,
नेता ने कहा क्यों रे भिखारी।
क्यों चिल्लाकर जान ले रहा हमारी।

अच्छा भला है, काम कर सकता है,
भीख के लिए नाहक भटकता है।
रोज–रोज मांगने चले आता है,
जैसे कमा के तू रख जाता है।

उपर से मुजोरी भी करता है,
पेट हमारे टुकड़ों से भरता है।
सड़कछाप तू करता कैसी बात है।
जरा देख तेरी क्या औकात है,

नेता की बात सुन जमीन पर रखते हुए झोला।
भिखारी धीरे से नेता से बोला,

भाई, क्यों गुस्सा करता है,
भीख से नाहक चिढ़ता है।

ठण्डे दिमाग से सोच, जरा कर विचार,
जितनी चाहे फिर करना चिल्ला–पुकार।।
देख नेता तेरा और मेरा एक ही धंधा है,
पर मेरा साफ सुथरा और तेरा गन्दा है।
मैं रोटी और तू वोट मांगता है,
सारा शहर ये जानता है।

इसलिए तुझे बड़ा भिखारी
और मुझे छोटा मानता है।

मैं रोज पेट के लिए भीख मांगता हूं,
हर मोहल्ले घर को जानता हूं।
कोई देता, कोई आगे बढ़ाता है,
मैं बढ़ जाता मेरा क्या जाता है।।
मैं बार–बार उसी मोहल्ले गली में जाता हूं,
रूखी–सूखी जो मिलती, अपनी भूख मिटाता हूं।

पर तू अपनी ओर देख, फिर बोल,
जाने कितनी छिपा रखी हैं पोल।

मैं छोटा तू है बड़े कद वाला है,
मौका मिलते ही, करता घोटाला।
मेरी भीख से किसी को, विशेष फर्क नहीं आता।
पर तेरे कर्मों से पूरा देश ही घबराता।।

मैं बेखटके बार–बार कहीं भी चले जाता,
पर तू तो फिर जाने से मुह छिपाता।

तू भीख मांगता वोट की,
और उसकी आड़ में कमाता है।
काले धंधे करता,
नहीं तू शरमाता है।

तू भीख के लिए कई स्वांग रचता है,
भीख के लिऐ हर नाटक करता है।

मेरी हवस छोटी भीख से मिट जाती है।
पर तेरी भूख निरन्तर बढ़ती जाती है।।

मैं सीमित साधन से सन्तोष हूं करता,
तू तो दुनिया हजम करने से नहीं डरता।
इसलिए धन्धा दोनों का भले ही है एक,
पर तुझसे तो मेरा ही धंधा है नेक।।

– प्रकाश आर्य, महू

जिन्दगी और मिठास

जिन्दगी से मीठी भी कोई चीज होती है ? नहीं। जिन्दगी से मीठी संसार में कोई चीज नहीं है। हॉ, सब लोग उस मिठास का अनुभव नहीं कर पाते। जिनका हाजमा खराब हो जाता है उनको मिठास रास नहीं आती। जिनका जायका खराब हो जाता है उनको जिन्दगी मीठी नहीं लगती।

कुछ लोग शिकायत किया करते हैं कि उनकी जिन्दगी में कड़वापन भर गया है। कुछ जिन्दगी को खारा और अन्य कसैला बताते हैं। वस्तुतः यह उनका भ्रम मात्र होता है। हर आदमी अपनी जिन्दगी से प्यार करता है। ऑखो से दिखाई न दे, जीभ लड़खड़ाने लग जाए, हाथ पैरों की शक्ति जवाब दे दे, कानों से सुनाई न देता हो, दॉत टूट जाएँ–तब भी, किसी भी कीमत पर, कोई मृत्यु को स्वीकार करेगा ? कदापि नहीं।

घोर संकट में भी आदमी अपने जीवन की रक्षा करना चाहता है। आदमी की सबसे पहली आदिम चाह जीवन धारण करना हैं। उसको किसी भी कीमत पर कोई खोना नहीं चाहता।

फिर जिन्दगी से शिकायत क्यों करते हो ? इसलिए कि उनकी शिकायत करने की आदत पड़ जाती है। उनकी शिकायत को सही मान लें और यह स्वीकार कर लें कि जिन्दगी में कड़वाहट या कसैलापन है अथवा खारापन या तीखापन हैं तो भी यह बात तो प्रमाणित है कि प्राकृतिक जगत में इन सबसे मिठास बनता है। मीठापन अपने आपमें कुछ नहीं होता। वह तो विविध रसों की ही परिणति है।

गन्ना खारा होता है। पकने पर मीठा हो जाता है। आम खट्टा होता है। पक जाने पर वह भी मीठा हो जाता है। निम्बोली कड़वी होती है। पकने पर मीठी हो जाती है। मिर्ची तीखी होती है। उसके भी छिलके मीठे होते हैं। आंवला कसैला होता है। उसे खाकर पानी पीने पर मीठा लगता हैं। इसे देखकर कहा जा सकता है कि मिठास सारे रसों की परिणति है। अपने आप जिन्दगी के कड़वेपन, खारेपन, तीखेपन, कसैलेपन के बीच में से मिठास पैदा होती है। मिठास अपने आपमें कुछ है ही नहीं।

आवश्यकता इस मिठास को पहचानने की है। इसी का नाम जीवन रस है। जिन्दगी को जीवन रस से आपूरित करने की बात पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। संघर्षमय जीवन से तो जीवन रस अपने आप पैदा होता चला जाता है। जो चुनौतियों से डरते हैं, कठिनाइयों को देखकर भागते हैं, अधूरे मन से काम शुरू करके उसे बीच में छोड़ देते हैं, किसी पर विश्वास नहीं करते, किसी के विश्वास भाजन नहीं बनते, सुबह से शाम तक हाय हाय किया करते हैं उनके जीवन में जीवन रस नहीं भर पाता। उनके जीवन में मिठास भी पैदा नहीं होती। जब जिन्दगी मीठी हो और उसमें मिठास भरना अपन हाथ की बात हो और उस मीठेपन से वंचित रह जाएँ तो उसे कैसी जिन्दगी कहेगें।

– पंचोली

धर्म के 6 आधार

सत्यं बृहद् ऋतम् उग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

– अथर्व. 12/1/1

पृथिवी को धारण करते हैं, छह आधार। वे हैं –

(1) सत्य, (2) ऋत, (3) दीक्षा, (4) तप, (5) ब्रह्म और (6) यज्ञ।

इन 6 आधारों पर ही यह पृथिवी टिकी है।

सत्य – धर्म में सत्य को सबसे पहला स्थान दिया गया है। देना भी चाहिए। ऋग्वेद में कहा है–

सत्यमिद् वा उ तं वयम्। इन्द्र स्तवाम नानृतम्।

– ऋ. 8/62/12

'आइये, हम इन्द्र की उपासना करें। वे सत्य हैं, असत्य नहीं।'

ऋतः – का अर्थ है–सीधी रेखा, नियम। संसार के सभी पदार्थ नियम के अनुसार चलते हैं, सीधी लकीर में चलते हैं। मनुष्य को भी इसी तरह नियम से, सीधी रेखा में चलना चाहिए। नीति के अनुसार, नियम के अनुसार चलना चाहिए।

'ऋत' में न्याय भी आता है, सदाचार भी।

सत्य और ऋत दोनों पर देने का मतलब है, ज्ञान और विज्ञान दोनों पर जोर देना। ब्राह्मण भी अपने धर्म का पालन करें, क्षत्रिय भी। तभी समाज की गाड़ी ठीक ढंग से आगे बढ़ सकेगी और धर्म टिक सकेगा।

दीक्षा और तप – सत्य की साधना के लिए दीक्षा भी चाहिए और तपस्या भी। यजुर्वेद में कहा है –

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। यजु. 19/30

व्रत से दीक्षा मिलती है, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से श्रद्धा और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।

तप का अर्थ है – इन्द्रियों का संयम। किसी भी लक्ष्य को पाने लिए तप करना ही पड़ता है। धर्म को पाने के लिए भी तप करना जरूरी है। ब्रह्मचर्य–जीवन में जिस तरह तपस्या करनी पड़ती है, उसी तरह आगे भी।

ब्रह्म और यज्ञ – ब्रह्म का अर्थ है, प्रार्थना। वैदिक मन्त्रों का विधिवत् पाठ करना, मन्त्रों का जप करना, परमात्मा की स्तुति और प्रार्थना करना धर्म का आवश्यक अंग माना गया है। उसी तरह यज्ञ करना भी। प्रार्थना और यज्ञ करने वाला सदाचारी होना चाहिए। नहीं तो उसकी पूजा – प्रार्थना का कोई अर्थ नहीं है। सदाचारी लोग ही तरते हैं, दुराचारी नहीं।

ऋग्वेद में कहा गया –

ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः।

"स्वामी दयानन्द की दृष्टि में यज्ञ"

जब अग्नि में सुगन्धित पदार्थों का हवन होता है, तभी यह यज्ञ वायु आदि पदार्थों को शुद्ध करके तथा शरीर और ओषधि आदि पदार्थों की रक्षा करके अनेक प्रकार के रसों को उत्पन्न करता है। उन शुद्ध पदार्थों के भोग से प्राणियों के विद्या, ज्ञान और बल की वृद्धि भी होती है।

जो यज्ञ के धूम से शोधे हुए पवन हैं, वे अच्छे राज्य के कराने वाले होकर रोग आदि दोषों का नाश करते हैं और जो अशुद्ध अर्थात दुर्गन्ध आदि दोषों से भरे हुए होते हैं वे सुखों का नाश करते हैं। इससे मनुष्यों को चाहिए कि अग्नि में होम द्वारा वायु की शुद्धि में अनेक प्रकार के सुखों को सिद्ध करें।

मनुष्यों को योग्य है कि यज्ञविधि से सब पदार्थों का अच्छे प्रकार शोधन करके, सबका सेवन कर और रोगा का निवारण करके सर्दव सुखी रहें।

यदि यजमान और यज्ञ करने वाले विद्वान हों और सुशोधित द्रव्यों को अग्नि में होमें तो क्या क्या सुख प्राप्त न हों।

मनुष्यों को चाहिए कि वे आप्त विद्वानों के संग से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाले यज्ञ का विस्तार करें।

जो यज्ञ से शुद्ध किये हुए अन्न, जल और पवन आदि पदार्थ हैं, वे सबकी शुद्धि, बल, पराकम और दृढ़ दीर्घ आयु के लिए समर्थ होते हैं, इससे सब मनुष्यों को यज्ञकर्म का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।

मनुष्य अग्नि में जो आहुति देते हैं वह वायु के साथ मेघमण्डल में जाकर सूर्य से आकर्षित जल को शुद्ध करती है। फिर वहां से वह जल पृथ्वी पर आकर ओषधियों को पुष्ट करता है। वह उक्त आहुति वेदमन्त्रों से ही करनी चाहिए, जिससे उसका फल–ज्ञान होने पर नित्य श्रद्धा उत्पन्न हो।

जिस यज्ञ से सब सुख होते हैं, उसका अनुष्ठान सब मनुष्यों को क्यों न करना चाहिए ?

जो मनुष्य अग्निहोत्र आदि यज्ञों को प्रतिदिन करते हैं वे समस्त संसार के सुखों को बढ़ाते हैं, यह जानना चाहिए।

होम नामक यज्ञ वह है, जिसमें मांस, क्षार, अम्ल, तिक्त आदि गुणों से रहित किन्तु सुगन्धि, पुष्ठ, मिष्ट, रोगनाशक आदि गुणों से युक्त होवें हों।

जो मनुष्य यज्ञ से शुद्ध किये जल, ओषधि, पवन, अन्न, पत्र, पुष्प, फल, रस, कन्द अर्थात अरबी, आलू, कमेरू, रतालु, शकरकन्द आदि पदार्थों का भोजन करते हैं वे नीरोगी होकर बुद्धि, बल, आरोग्य और दीर्घायु वाले होते हैं।

मनुष्य नित्य सुगन्ध्यादि पदार्थों को अग्नि में छोड़ अर्थात हवन का, पवन और सूर्य की किरणों द्वारा वनस्पति, ओषधि, मूल, शाखा, पुष्प और फलादिकों में प्रवेश कराके सब पदार्थों की शुद्धि का आरोग्य की सिद्धि करें।

मनुष्यों को चाहिए कि जीवनपर्यन्त शरीर, प्राण, अन्तःकरण, दशों इन्द्रियां और जो सबसे उत्तर सामग्री हो उसको यज्ञ के लिए समर्पित करें, जिससे पापरहित कृतकृत्य होकर परमात्मा को प्राप्त होकर इस जन्म और द्वितीय जन्म में सुख को प्राप्त होवें।

हे मनुष्यों ! सब यज्ञों में अग्नि आदि को ही पशु जानो। प्राणी इन यज्ञों में मारने योग्य नहीं, न होम के योग्य हैं। जो ऐसा जानकर सुगन्ध्यादि द्रव्यों को सुसंस्कृत करके अग्नि में होम करते हैं, उनके वे द्रव्य वायु और सूर्य को प्राप्त होकर वर्षा द्वारा वहां से लौटकर औषधि, प्राण, शरीर और बुद्धि को क्रमशः प्राप्त होकर सब प्राणियों को आनन्द देते हैं। इस यज्ञ कर्म के करने वाले पुण्य के महत्व से परमात्मा को प्राप्त होकर महिमान्वित होते हैं।

मनुष्यों को इस प्रकार का यज्ञ सदैव करना चाहिए जो पूर्ण श्री, सम्पूर्ण आयु, अन्नादि पदार्थ, रोगनाश और सब सुखों का विस्तार करता है। वह किसी को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

साभार – यज्ञ थैरेपी

मन जीते जग जीते

जगदगुरू शंकराचार्य से उनके शिष्य ने पूछा – जगत् कौन जीत सकता है ?

जगदगुरू बोले – जो मन को जीत लेता है।

मन को वश में रखिये

महाराज जनक से एकबार किसी ने एक प्रश्न पूछा। जनक एक वृक्ष के पास खड़े थे, बोले – यह वृक्ष मुझे छोड़ दे तो आपके प्रश्न का उत्तर दूँ।

पूछने वाले ने कहा – महाराज ! आप ज्ञानी होकर मूर्खों की सी बातें करते हैं। वृक्ष ने आपको नहीं पकड़ रखा, आपने वृक्ष को पकड़ रखा है। यह वृक्ष तो जड़ है, यह आपको क्या पकड़ेगा ?

जनक ने कहा – तू ठीक कहता है भाई ! यह वृक्ष जड़ है। इसने नहीं, मैंने इसको पकड़ रखा है। परन्तु याद रख, मन भी तो जड़ है। उसने तो तुम्हें पकड़ नहीं रखा। फिर मुझसे क्यों कहते हैं कि वह छोड़ता नहीं ?

यह है साधन मन को वश में करने का। मन को वास्तविकता को समझो। यह जड़ है। उसमें कोई शक्ति नहीं। शक्ति तुम्हारे अन्दर है। ऐसा समझोगे तो मन वश में अवश्य हो जायेगा।

आखिर क्यों ?

यज्ञ आदि में मन्त्रों का उच्चारण उंचे स्वर से क्यों किया जाता है ?

यज्ञ में मन्त्रों का उंचे स्वर में उच्चारण करने से तथा आहुतियां देने से आकाश में अदृश्य आध्यात्मिक विद्युत तरंगें फैलती हैं जो यज्ञ रूप प्रभु तक पहुंचती हैं। मन्त्र की ध्वनि तरंगें जहां तक पहुंचती हैं वहां तक कलुषित स्वभाव वाली आत्माओं का निवास नहीं होता। मन्त्रोच्चारण का स्वर जिन गर्भवती महिलाओं के कानों में पड़ता है उनके गर्भ में पल रहे बालक में आध्यात्मिकता की आस्था उत्पन्न होती है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण अर्जुन पुत्र अभिमन्यु है जिसने पिता के मुख से उच्चारित और मॉ के कानों से सुनकर चक्रव्यूह भेदन की कला का ज्ञान गर्भ में ही प्राप्त किया था। यही कारण है कि हमारी बड़ी बूढ़ी महिलायें कहा करती थीं कि गर्भवती मॉ को यज्ञ करना चाहिये, सत्संग में जाना चाहिये। प्रतिदिन गीता का एक अध्याय पढ़ना चाहिये। आज भी अगर हम अपनी भावी पीढ़ी का सही निर्माण करना चाहते हैं तो हमें अच्छे अच्छे आध्यात्मिक व उच्च स्तर के जीवन निर्माण करने वाले कैसेट गर्भवती मॉ को सुनाने चाहिये। आज डॉ. का कहना है कि गर्भवती महिला जैसा आहार–विहार करती है वैसा ही प्रभाव गर्भ में पल रहे शिशु पर पड़ता है। फिर मॉ के कानों द्वारा सुने गये मन्त्रों का प्रभाव शिशु पर क्यों नहीं पड़ेगा।

हिन्दुओं के लिये जनेऊ धारण करना अनिवार्य है आखिर क्यों ?

जनेऊ हिन्दुत्व का प्रतीक है। उपनयन संस्कार के पश्चात इसे सभी धारण करते थे। विवाहित लोग छः तार का जनेऊ धारण करते थे क्योंकि उन दिनों स्त्रियों को जनेऊ धारण करने का अधिकार नहीं होता था। महर्षि देव दयानन्द ने बताया कि स्त्री व पुरूष दोनों को समान रूप से इसे धारण करने का अधिकार है। तब से तीन तार का जनेऊ स्त्री व पुरूष धारण करते हैं। परन्तु कुछ पौराणिक लोग अब भी छः तार का जनेऊ करते हैं।

यह तीन सूत्र हमें सदा स्मरण करते रहते हैं कि ज्ञान, कर्म और ईश्वर भक्ति ही मुक्ति के साधन है। यज्ञोपवीत के वे तीन धागे तीनों ऋणों की माता पिता ऋण गुरू (ऋषि) ऋण तथा ईश्वर ऋण जिन्हें हम इस जीवन में चुकाना है। जब तक इसे धारण करने की परम्परा चलती रही, तब तक बुजुर्गो व गुरूओं का समाज में स्थान सम्मानपूर्वक था ईश्वर के प्रति आस्था व भय के कारण मानव जीवन सुखी व आनन्दमय था परन्तु पाश्चात्य सभ्यता के कारण जनेऊ धारण करने की लगभग समाप्त सी हो गई है। बड़े बूढों व गुरूओं के प्रति जो दृष्टिकोण आज युवा पीढ़ी का है वह जग जाहिर है। यही भावना ईश्वर के प्रति है। आजकल तो बस खाना पीना तथा मौज करना ही जीवन का लक्ष्य रह गया है।

लघु शंका व दीर्घशंका के समय लोग जनेऊ को खींचकर दाहिने कान पर कस देते हैं ताकि यह अपवित्र न हो जाये परन्तु सच्चाई यह है कि दाहिने कान की एक नाड़ी जिसे आयुर्वेद में लोहितिक कहते हैं का सीधा संबंध अण्डकोष से होता है इसे दबाने से स्वस्थ आदमी का भी पेशाब निकल जाता है। अतः कान पर जनेऊ बांधने का अर्थ है पेशाब की अन्तिम बूंद तक बाहर आ जाना। इसलिये हरिणिया के ऑपरेशन में डॉक्टर भी दाहिने कान की नाड़ी का छेदन करते हैं। यज्ञोपवीत धारण किये बिना किसी याज्ञिक को यज्ञ करने का अधिकार नहीं है। आओ इन परम्पराओं को उपनयन संस्कार द्वारा पुनः जीवित करें। स्कूल व कॉलेज के बच्चों को इसकी सही जानकारी दें तथा शिक्षण संस्थाओं में सामूहिक रूप से बच्चों का उपनयन संस्कार अनिवार्य कर दें।

हिन्दू स्त्रियॉ मांग में सिन्दूर क्यों लगाती हैं ?

मांग में केवल विवाहित स्त्रियां ही सिन्दूर लगाती हैं जो उनके सुहागिन होने का प्रमाण है। जो पुरूष जिस स्त्री की मांग में सिन्दूर भरता है वह सदा सदा के लिये उसी की हो जाती है। उसके जीवन का सम्पूर्ण भार जीवनभर के लिये उसी पुरूष पर आ जाता है। पत्नी उसके जीवन के हर क्षेत्र में संगिनी बन जाती है। इतनी शक्ति है इस चुटकी भर सिन्दूर में।

धनुष तोड़कर राम ने सीता को प्राप्त किया। सीता ने राम के गले में वर माला डाली उन्हें समाज के सामने पति के रूप में स्वीकार किया परन्तु विवाह की पूणता तब तक पूर्ण नहीं हुयी जब तक दोनों पक्षों के सामने वैदिक रीति से श्री रामचन्द्र जी ने मन्त्रोच्चारण के मध्य विधि पूर्वक सीता जी की मांग में सिन्दूर नहीं भरा। इस पवित्र प्रकिया को "सिन्दूर दान" कहते हैं। सिन्दूर दान विवाह की सर्वोच्च विधि है। जो दो अजनबियों को अटूट प्रेम के बन्धन में बांध देती है। जिसे रावण जैसे बलशाली शासक भी नहीं तोड़ सका।

आखिर क्यों न इसे हर भारतीय नारी सदा सीता की तरह धारण करें तथा अपने दाम्पत्य जीवन को मधुर एवं स्वर्ग समान बनाएं। सुखी गृहस्थी स्वाभाविक रूप से पति की आयु बढ़ाने वाली, पत्नि का दामन खुशियों से भरने वाली होगी। ऐसे ही कुछ शब्द सीता ने हनुमान जी से कहे थे जब हनुमान ने सीता जी से सिन्दूर भरने का कारण पूछा था। मांग में सिन्दूर भरना नारी के लिए कथित सोलह श्रृंगारों में से एक है। यह नारी की सुन्दरता को बढ़ाता है जिससे उसमें आकर्षण बढ़ता है। आज युवा पीढ़ी के श्रृंगार के उद्देश्य व साधन ही बदल गये हैं। आज विवाह खिलौना बन गया है। जब चाहो उससे खेल लो और जब चाहो उसे तोड़ दो। आज विवाह बोझ स्वरूप बन गये हैं। अतः प्रेम की डोर में बंधने वाली परम्पराओं के सही अर्थों व लक्ष्य को समझाते हुए उन्हें पुनः सही अर्थों में अपनाने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। ऐसा तभी होगा जब विवाह वैदिक विधि से योग्य पण्डित द्वारा सम्पन्न होगा।

— **अरूणा सतीजा**, जयपुर

मृत्यु और समय

एक दानवीर राजा के इकलौते लड़के को एक सर्प ने डस लिया। वह सर्प इतना जहरीला था, कि उस लड़के की उसी क्षण मृत्यु हो गयी। अपने लड़के की अकाल मृत्यु से उस राजा को गहरा शोक हुआ। उसने तुरन्त एक सपेरे को बुलाकर गुस्से में आदेश दे दिया कि – सपेरे, जिस सर्प के डसने से मेरे इकलौते पुत्र की मृत्यु हुई है, तुम उसे पकड़कर मार डालो।

सपेरे ने अपनी बीन के माध्यम से अथक प्रयास करके उस सर्प को पकड़ लिया और उसे ज्यों ही मारना चाहा, कि वह सर्प बड़ी तेजी से बोला 'ठहरो सपेरे ठहरो' उस सपेरे ने आश्चर्य से कहा – क्यों ठहरूं जल्लाद कहीं का ?

सर्प बोला, तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो ?

सपेरे ने कहा, धूर्त सर्प, तुम्हें ही नहीं तुम्हारी जाति के सभी सर्पों को मार दूंगा क्योंकि तुमने मेरे राजा के इकलौते बच्चे का डस लिया, जिसके कारण उसकी मृत्यु हो गयी।

सर्प बोला – हे सपेरे ! मैंने राजा के बेटे को नहीं मारा है। उसकी तो मृत्यु आ गयी थी। मृत्यु ने मुझसे कहा था, कि इसे डस लो, तो मैंने डस लिया।

सपेरे ने अब मृत्यु को खोजना प्रारम्भ कर दिया और अन्त में उसके पास पहुंच गया और मृत्यु से बोला – मृत्यु तुम्हारे कारण मैं कितने ही सर्पों को मार द्रूंगा। इसका पाप तुम्हें ही लगेगा, क्योंकि तुमने एक सर्प को मेरे दानवीर राजा के इकलौते लड़के को डसने की आज्ञा दी थी ?

मृत्यु ने सपेरे की और देखकर मुस्कुराकर कहा – नादान सपेरे, मैंने सर्प को डसने की आज्ञा इसलिए दी क्योंकि समय ने आकर मुझसे ऐसा आदेश दिया था।

अब वह सपेरा समय को खोजने लगा। परन्तु समय पकड़ में आना अत्यन्त कठिन था क्योंकि समय की गति सपेरे की गति से तेज थी। इसलिए समय आगे आगे भागता रहा और सपेरा बड़ी तेज भागते हुए समय के करीब पहुंच गया और बड़े जोर से चिल्लाया, समय तुम पापी हो। तुम्हारे कारण मृत्यु ने पाप किया और सर्प जाति दोषी बनी। दण्ड के असली अधिकारी तुम ही हो।

समय सपेरे से बोला, मूर्ख सपेरे, तुम समय को नहीं समझ सकते। हर एक कार्य का समय निर्धारित होता है। जिसे समय को समय पर करना ही पड़ता है। अगर समय ने अपना काम समय पर नहीं किया तो दुनिया का भूगोल उल्टा पुल्टा हो जायेगा। समस्त प्रकृति का विनाश हो जायेगा। समय गतिशील होता है और उसकी गति का संचालन स्वयं ईश्वर को करना पड़ता है। इसलिए समय की गति में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं हो सकती। समय को दोष देकर व सर्पों को दण्ड देकर तुम स्वयं पापी बनोगे। तुम्हें किसी को दण्ड देने का अधिकार नहीं है।

सपेरे को समय के महत्व का पता चल चुका था अतः यह सुनते ही वह वहां से वापिस लौट आया। उसकी समझ में आ चुका था कि जो जन्म लेता है वह अन्त को प्राप्त होता ही है। कारण बदलते रहते हैं जो ईश्वर या भाग्य निश्चित करते हैं। आने वाला समय कभी रूक नहीं सकता और बीता हुआ समय कभी वापस लौट नहीं सकता।

जीवन में श्रम और विश्राम का महत्व

– स्वामी विद्यानन्द विदेह

श्रम और विश्राम का विज्ञान बड़ा उपयोगी विज्ञान है। यदि तुम अपने विद्यार्थी जीवन में इसका महत्व समझकर तदनुसार कार्य करने का अभ्यास कर लोगे तो तुम्हारे जीवन का मार्ग सदा के लिए प्रशस्त हो जाएगा और तुम यावदायुष्य, निरन्तर उत्कर्ष को प्राप्त होते रहोगे।

श्रम और विश्राम का परस्पर वही संबंध है जो भूख और भोजन का है। बिना भूख भोजन करना जितना हानिकर है, बिना श्रम विश्राम करना उससे कहीं अधिक हानिकर है। यथाक्षुधा भोजन यथाक्षुधा विश्राम इस सुनहरी सिद्धान्त को तुम सदा के लिए याद कर लो।

क्षुधा से अधिक भोजन करने से स्वास्थ्य की जितनी हानि होती है उससे कहीं अधिक हानि श्रम से अधिक विश्राम करने से होती है। कितनी अधिक क्षुधा लगी हो, भोजन उतना ही स्वादिष्ट लगता है। वैसे ही, जितना अधिक श्रम किया जाता है, विश्राम भी उतना ही हितकर होता है। बिना भूख के भोजन विष है, बिना श्रम के विश्राम विष है।

चौबीस घण्टों में कम से कम सोलह घण्टे श्रम करो और अधिक से अधिक आठ घण्टे विश्राम करो। नित्य सोलह घण्टे उपयोगी काम करो और आठ घण्टे गहरी नींद सोकर विश्राम करो। अपने स्वयं के सब काम स्वयं करो। आप काज महाकाज, इस कहावत को कभी न भूलो।

छोटे से छोटा समझे जाने वाले कार्य को बिना किसी झिझक के करो। अपना सब काम स्वयं करने से तुम्हारे जीवन में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की स्थापना होगी। अपने कामों के साथ दूसरों के कामों में भी हाथ बटाओ। हर समय कुछ न कुछ उपयोगी और अच्छा कार्य करते ही रहो। एक मिनट भी खाली न बैठों।

श्रम और विश्राम का मर्म जानो। जो सुख चाहते हो, मेरा कहना मानो।

त्यागवाद के आदर्श : श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण ने मथुरा के अत्याचारी राजा कंस को मारकर मथुरा के राज्यपर अपना अधिकार नहीं किया अपितु उसके वास्तविक अधिकारी कंस के पिता श्री उग्रसेन को राज्य सिंहासन पर बैठाया। इसी प्रकार जरासंघ को मारकर उसके यहां बंदी किये हुए राजाओं को छुड़ाया। जरासंघ की राजगद्दी पर उसके पुत्र को बैठाया। कौरवों का विनाश करके युधिष्ठिर को राजा बनाया। किसी का कुछ भी हिस्सा उन्होंने नहीं लिया, इस प्रकार आदर्श त्यागवाद का परिचय दिया।

महर्षि दयानन्द रोग निदान केन्द्र का शुभारंभ

रतलाम। आर्य समाज धानमण्डी भवन में रोग निदान केन्द्र का शुभारंभ आर्य समाज तथा श्री मेढ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज के संयुक्त तत्वावधान में प्रारंभ हुआ।

शुभारंभ के अवसर पर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री भगवानदास अग्रवाल ने आर्य समाज के नियमों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि समाज का छठा नियम है संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना न केवल भारत, हिन्दू या आर्य समाजी वरण मानव मात्र का उपकार करना। इसी के पालन में पूरे भारत में आर्य समाज अनेक गतिविधियों के साथ विशेष रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में सेवा दे रहा है और इसी कड़ी में आज रोग निदान केन्द्र प्रारंभ किया गया है। अति अल्प पंजीयन शुल्क रू. 20/– में शुगर, ब्लड प्रेशर, ई सी जी भी शीघ्र प्रारंभ किया जावेगा। ई सी जी मशीन आर्य समाज के उपप्रधान श्री राजेन्द्र सोनी ने उनकी स्वर्गीय धर्मपत्नि श्रीमती कला सोनी की स्मृति में देने की घोषणा की और मशीन शीघ्र प्राप्त हो जाएगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जैन दिवाकर अपोलो हॉस्पिटल के इंचार्ज श्री डॉ. श्याम सोनी ने की और उन्होंने कहा कि वे हॉस्पिटल के प्रबंधक समिति से चर्चा करेगें कि समाज द्वारा जिन मरीजों को ईलाज के लिए सिफारिश करेगें उन्हें ईलाज में कुछ आर्थिक छूट मिलें।

आर्य समाज धानमण्डी की प्रधाना श्रीमती ज्योति पांचाल, मन्त्री राजेन्द्र बाबू गुप्त, श्यामलाल सोनी, पूर्व प्रधान ओमप्रकाशजी सोनी, श्रीमती शोभा बहन पांचाल, प्रकाश अग्रवाल, रेल्वे कॉलोनी आर्य समाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री श्री रामकुमार यादव तथा अन्य सदस्य उपस्थित थे। श्री मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज के अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर रूणवाल, जिला अध्यक्ष रमेश सोनी पतंजलि योगा की जिला अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा अग्रवाल व प्रान्तीय संचालक श्री रमेशजी छीपा भी उपस्थित थे। आभार क्षत्रिय मेढ स्वर्णकार समाज के सचिव श्री रमेशजी सोनी ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुनील सोनी ने किया।

रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं।
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूं।।

प्रान्त में वेद प्रचार

सभा प्रचारक श्री सुरेश शास्त्री द्वारा :

1. आर्य समाज, गोसपुरा नं. 1 ग्वालियर दि. 2 से 4 अक्टूबर 2015
2. आर्य समाज, कुंआ बड़वानी दि. 7 एवं 8 अक्टूबर 2015
3. ग्राम केरवां श्री बालाजी इंजीनियरिंग कॉलेज दि. 9 अक्टूबर 2015
4. आर्य समाज सुन्द्रेल धामनोद दि. 10 अक्टूबर 2015
5. ग्राम बगड़ीपुरा, सुन्द्रेल धामनोद दि. 11 अक्टूबर 2015
6. ग्राम कवड़िया दि. 12 अक्टूबर 2015
7. ग्राम मोगावॉ दि. 13 अक्टूबर 2015
8. आर्य समाज मुरैना दि. 25 से 17 अक्टूबर 2015
9. आर्य समाज सनावद क्षेत्र ग्राम टोकलाय, बड़ूद, गुजली, बावड़िया में दिनांक 28 से 31 अक्टूबर 2015 तक वेद प्रचार किया गया।

सिंहस्थ मेला समिति

अपील

सार्वदेशिक सभा, देश विदेश की समस्त प्रान्तीय सभाओं, समस्त पदाधिकारियों एवं आर्य समाजों से प्रार्थना हैं कि शिविर में अन्न, खाद्य पदार्थ, दाल, चावल, घृत (देशी घी), शक्कर व अन्य खाद्य पदार्थों से शिविर में स्वेच्छा से सहयोग प्रदान कर आपके अपने आयोजन को सफल बनायें।

सभी दान राशि **"सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति"** के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा, आर्य समाज मन्दिर, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म. प्र.) के पते पर भेजें।

SBI A/c No. 35072661286 IFS Code : SBIN0000492

दान राशि खाते में जमा कर या जमा स्लीप पर अपना नाम, स्थान एवं पता लिखकर फोटो कॉपी भिजवायें।

Email : aryasmjujnkumbh2016@gmail.com

विनीत :

प्रधान	संयोजक	प्रधान
म. भा. आर्य प्रति. सभा	**सिंहस्थ मेला वैदिक**	**समस्त सदस्यगण**
एवं आर्य प्रति. सभा	धर्म प्रचार समिति	आर्य समाज, उज्जैन

वैदिक धर्म प्रचार का महत्वपूर्ण अवसर उज्जैन सिंहस्थ

दिनांक 22 अप्रेल से 21 मई 2016 तक

मान्यवर,

भारत वर्ष में कुंभ और सिंहस्थ के नाम पर संभवतः ये विश्व के सबसे बड़े आयोजन होते हैं। जिसमें एक माह तक करोड़ों की संख्या में जन मानस का अपना जाना होता है।

हम प्रयास करके भी कभी इतनी बड़ी संख्या एकत्रित नहीं कर सकते। यह हमारी बात, वैदिक सिद्धान्तों को करोड़ों व्यक्तियों तक पहुंचाने का बहुत बड़ा समय है। इस बार 22 अप्रेल से 21 मई तक एक नहीं दो स्थानों पर पांडाल लगाकर वैदिक धर्म प्रचार की योजना बनाई गई है। इसके द्वारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम आने वाली इतनी बड़ी संख्या में से लाखों व्यक्तियों तक अपनी बात पहुंचावेगें। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी ऐसे ही अवसर पर कुंभ में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी।

भव्य यज्ञशाला, प्रवचन, व्याख्यान, भजन की प्रस्तुती, विशाल प्रदर्शनी, विचार चैनल के माध्यम से लघु फिल्म शो, विकय हेतु अनेक स्टॉल, वैदिक विचारधारा का निःशुल्क साहित्य वितरण, बाहरी साज सज्जा यह सबकुछ अभूतपूर्व करने का प्रयास प्रारंभ हो चुका है।

किन्तु हम सबका सहयोग ही इस पवित्र वेद प्रचार के भव्य आयोजन को सफल बना सकता है।

अतः कृपया सभी इस पवित्र कार्य में अपनी आहुति प्रदान करें। कार्यक्रम हेतु आवश्यक सुझाव भी आर्य समाज, नई सड़क, उज्जैन के पते पर भेज सकते हैं।

विनीत :

इन्द्रप्रकाश गांधी	**लक्ष्मीनारायण पाटीदार**	**वेदप्रकाश आर्य**
सभाप्रधान	संयोजक	कोषाध्यक्ष
म.भा.आ.प्रति.सभा	वैदिक धर्म प्रचार समिति	वैदिक धर्म प्रचार समिति
9425137097	**9827078880**	**9425930484**

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, ऑस्ट्रेलिया

दिनांक 27 से 29 नवम्बर 2015 को आस्ट्रेलिया सिडनी में 10 वॉ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न होने जा रहा है। इसके पूर्व भारत, अमेरिका, मॉरिशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, भारत, दक्षिण अफ्रिका, सिंगापुर, थाईलैण्ड में सम्पन्न हो चुके हैं। सम्मेलन में भाग लेने वाले यात्रियों के साथ कुछ यात्री न्यूजीलैण्ड भी जावेगें जहॉ संक्षिप्त कार्यक्रम आर्य समाज की ओर से आयोजित किया जावेगा।

इस सम्मेलन में लगभग 20 देशों से आर्यजन भाग लेवेगें। भारत से लगभग 125 यात्री, इसमें भाग लेने हेतु सभा से मेरे साथ श्री लक्ष्मीनारायण पाटीदार, श्री गोविन्द आर्य, श्री तिलकराज गुलियानी एवं श्रीमती गुलियानी, भोपाल भी सिडनी पहुंच रहे हैं।

प्रकाश आर्य
सभामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

प्रिय पाठकगण,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन का प्रयत्न सरलतम किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए। साथ ही अपनी वार्षिक सहयोग राशि भी प्रेषित करें।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

प्रश्न : यज्ञ किसे कहते हैं ? यज्ञ की परिभाषा क्या है ?

उत्तर : यज्ञ का सामान्य अर्थ है दान देना, त्याग करना तथा वस्तुओं का ठीक–ठीक उपयोग लेना।

आर्य समाज महू द्वारा
आत्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना का अभूतपूर्व आयोजन
25 से 31 दिसम्बर 2015

आर्य समाज महू के तत्वावधान में महू नगर में सप्तम गायत्री महायज्ञ का आयोजन 25 से 31 दिसम्बर 2015 तक किया जा रहा है।

यह कार्यक्रम विगत कार्यक्रमों की तुलना में अधिक भव्य और विशाल होगा। हजारों की उपस्थिति में सनातन धर्मी भाग लेते हैं। कार्यक्रम में पूरे नगर का, ग्रामीण क्षेत्र का तथा आस पास के स्थित कई आर्य समाजों का सक्रिय सहयोग रहता है।

प्रातःकालीन सत्र से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम योगासन, यज्ञ, भजन, प्रवचन, वेद कथा, व्याख्यानमाला, सम्मेलन का बहुत ही व्यवस्थित व सार्थक आयोजन इस आयोजन किया जाता है। आमन्त्रित विद्वानों में वे विद्वान भी हें जो देश विदेश में अपनी विद्वता के कारण पहचान रखते हैं।

गायत्री महायज्ञ के नाम से आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. सत्यपाल जी 'सांसद', आचार्य वागीश कुमार जी, स्वामी सुमेधानन्दजी 'सांसद', डॉ. सुरेन्द्रकुमार जी (कुलपति–गुरूकुल कांगड़ी, हरिद्वार), डॉ. वेदप्रतापजी वैदिक (वरिष्ठ पत्रकार), श्री जगदीशजी शर्मा '(मैनेजिंग एडिटर दिव्य भास्कर, अहमदाबाद), आचार्या नन्दिता जी चतुर्वेदा, श्री कुलदीप आर्य उत्तर प्रदेश आदि के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

प्रतिदिन व्याख्यानमाला व संगीतमय वेदकथा का श्रवण हजारों श्रद्धालु करके जीवन अमृत पान करते हैं।

निश्चित ही भारत वर्ष में यह एक अनोखा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है जिसके सम्पर्क से सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रति आस्था का, अपने कर्तव्यों का संचार होता है। कार्यक्रम का उद्देश्य भीड़ एकत्रित कर अपनी पहचान बनाने का नहीं अपितु समाज को एक रचनात्मक, संगठनात्मक नैतिकता का सन्देश देना है। ईश्वर इस पवित्र उद्देश्य में अपना आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं, समस्त सनातन धर्मी आर्य समाज के साथ जुड़कर इसे सफल बना रहे हैं, यह प्रसन्नता की बात यही कार्यक्रम आयोजन का सबसे बड़ा संबल है। आगन्तुकों के लिए आवास व भोजन आदि की व्यवस्था समिति द्वारा की गई है। कृपया अभी से अपने पधारने का कार्यक्रम निश्चित कर सूचित करके ताकि व्यवस्था में सुविधा हो।

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना - पढ़ाना और सुनना - सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

।। ओ३म् ।।
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान हैं, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

।। ओ३म् ।।
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015-17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-71062